अलोकिक गीतांजलि - 4

नित याद करो मन से शिव को

नित याद करो मन से शिव को,

नित याद करो मन से शिव को...

कल्प के अन्त में शिव जब आये,

संगमयुग ही तब कहलाये

साधारण स्वरूप धारण किये, श्रेष्ठ कर्म करना सिखलाये

सुख, शान्ति, पवित्रता दे तुमको, नित याद करो.....

शिव बाबा अलौभ्य ने ही तुमको, सद्गुण प्रदान किये तुमको,

मन दर्पण को अब शुद्ध करो, निज आत्म में तेज प्रकाश भरो

अब दिव्य करो निज जीवन को,

नित याद करो मन से शिव को

नित याद करो मन से शिव को.....

➢➢ नित याद करो मन से शिव को

➳ _ ➳ निरंतर याद करो... श्वासों श्वास याद करो

→ अति के समय अंत का अभ्यास करो

➳ _ ➳ 21 प्रकार की याद

→ निश्चय और परिचय के आधार पर याद

→ समबंधो के आधार पर याद

- जितनी गहराई से सम्बन्ध जोड़े होंगे... याद भी उतनी गहरी होगी

→ प्राप्ति के आधार पर याद

- चिंतन कीजिये
  - यदि बाबा न मिलता तो हम कहाँ होते ? क्या कर रहे होते ?
  - मुझे उससे अभी और क्या क्या मिलने वाला है ?

→ उपकार वाली याद

- आभार / शुक्रिया करना ...
  - Gratitude का भाव

→ साथ के आधार पर

- दिन भर हर कर्म करते हुए उसे अपना साथी बनाओ और अनुभव करो की वह हर कर्म में आपको सहयोग दे रहा है...

- "सर्वशक्तिवान भगवान हमारे साथ है" - केवल यह भाव हमारे अन्दर शक्ति भर देगा और हर कर्म में हमें सफलता दिलाएगा

→ नशे वाली याद

- जितना ज्यादा नशा ... उतनी गहरी याद

→ प्यार वाली याद

→ पुकार वाली याद

- हम मैले हो गए हैं... धोबी को पुकार रहे हैं
- हम बंधन में फंस गए हैं... Liberator को पुकार रहे हैं
- हम भटक गए हैं... उस खवैया को पुकार रहे हैं
- हम दुःख में हैं.. उस सुख्हर्ता को पुकार रहे हैं

→ उलाहने वाली याद

- पहले क्यों नहीं मिले ?
- सतयुग में क्यों नहीं आते ?

→ झगडे वाली याद

→ सताने वाली याद

→ साधारण याद

→ अकारण याद

→ सूक्षम वतन वाली याद

- अनुभव कीजिये ... जहां आप कर्म कर रहे हैं... वह सूक्षम वतन बन चूका है

→ परमधाम वाली याद

→ पश्चाताप वाली याद

→ डर वाली याद

- धर्मराज के सम्बन्ध से अनुभव करें

→ वाचा वाली याद

- मुख से बाबा बाबा बोलना

→ कर्मणा वाली याद

- कर्मयोग

→ साकाश वाली याद

→ दूसरों को याद दिलाने वाली याद

- हमें देखकर दुसरे भी याद में स्थित हो जाएँ

→ मनन चिंतन वाली याद

→ स्वपन वाली याद

→ नियमपूर्वक याद

- Official याद

➢➢ कल्प के अन्त में शिव जब आये... संगमयुग ही तब कहलाये

➢➢ साधारण स्वरूप धारण किये

➳ _ ➳ हमारा स्वरुप साधारण हो... और कर्म श्रेष्ठ हों

➢➢ श्रेष्ठ कर्म करना सिखलाये

➢➢ सुख, शान्ति, पवित्रता दे तुमको

➢➢ शिव बाबा अलौभ्य ने ही तुमको

➢➢ सद्गुण प्रदान किये तुमको

➢➢ मन दर्पण को अब शुद्ध करो

➳ _ ➳ आत्मा की मेल सैफ करनी है

➢➢ निज आत्म में तेज प्रकाश भरो

➳ _ ➳ आत्मिक प्रकाश / शक्ति बढाना है

➢➢ अब दिव्य करो निज जीवन को

➳ _ ➳ अपने जीवन में दिव्यता लानी है

→ जब मैं अपने कमरे में अकेला हूँ... दरवाजे खिड़कियाँ बंद हैं ... उस समय मेरा चरित्र क्या है ?